लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 04 अंक 10 लखनऊ। सोमवार 27 से 03 दिसम्बर-2017

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

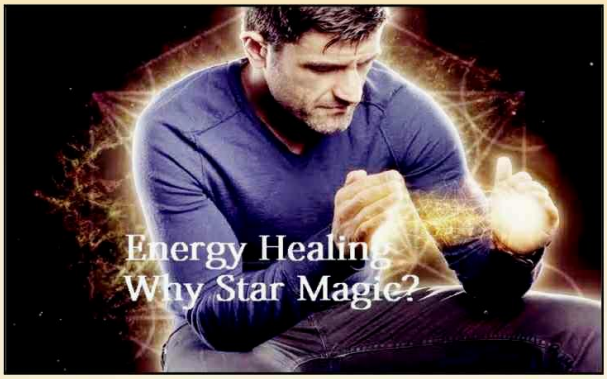

(भाग-27)

पिछले 26 (छब्बीस) अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्त्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर में चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता हैः ऊर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-I व विशिष्ट उपचार स्तर-II में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइजेशन व अवरूद्ध चक्र, औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया, आभा और चक्रों के गूढ़ ज्ञान, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों को पढ़ने की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों के पार्दर्शिता के पश्चात कैंसर, हृदय, मधुमेह आदि रोगियों के कुछ आवश्यक सलाह दी गयी है।

27.0 चक्रों के उपचार के बाद कुछ आवश्यक सलाह

27.1 कैंसर रोगियों की सहायता: कैंसर रोगियों के लिए प्रभावित क्षेत्रों के आस-पास हाथों की दौरान अपने हाथों को सीधे रोगग्रस्त क्षेत्र पर लगभग 15 मिनट की अवधि तक ले जायें और इस अवधि के दौरान हाथ की पासिंग 3 से 4 बार प्रभावित क्षेत्र के जितना करीब हो सके, कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में हाथों को करीब रख कर स्थिर रखने के सापेक्ष, जितना घुमाते रहेंगे उपचार उतना ही प्रभावी होगा। कुछ क्षेत्रों जैसे-प्रोस्टेट, बृहदान्त्र और स्तन के उपचार में, यह आवश्यक हो सकता है कि रोगी के आराम और नम्रता को ध्यान में रखते हुए, हाथों को सीधे क्षेत्र पर न लाकर उपचार किया जाए। इन मामलों में, क्षेत्र के विपरीत दिशा में हाथों को आरामदायक के रूप में रखें और उपरोक्त वर्णित विधि के अनुसार हाथों को घुमाए। स्तन के कैंसर में, उदाहरण के लिए-रोगी के स्तन के क्षेत्र के विपरीत दिशा में हाथ को ले जाएं और घुमाये। बृहदान्त्र या प्रोस्टेट कैंसर के लिए, एक हाथ को पेट निचले हिस्से जो दूसरा चक्र के नीचे स्थित है और दूसरे हाथ को पैर के ऊपरी हिस्से पर जननांग क्षेत्र के पास एक आरामदायक स्थिति के रूप में ले जाये। प्रभावित क्षेत्र के पास कुछ मरीजों पर, औरिक दोष को हटाने की आवश्यकता हो सकती है। आभा चार्जिंग की प्रक्रिया लगभग सर्वत्र गंभीर मामलों में ही दी जाती है। परंतु प्रभावित क्षेत्र मे रिसाव (लीकेज) और अन्य क्षतिग्रस्त क्षेत्रों को बंद (सील) करना अक्सर आवश्यक होता है, खासकर उन रोगियों के लिए जिन्होंने विकिरण चिकित्सा (रेडिएशन थेरापी) प्राप्त कर रहे हैं। प्राणिक ऊर्जा के उपचार करने वालों के लिये सकारात्मक दृष्टिकोण भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उन मरीजों के लिये कैंसर के फैलने के अधिक आसार हो, उनके शरीर के उन क्षेत्रों की विशेष जानकारी हेतु, अपने सहज विचारों (इनट्युटिव) से अधिक जानकारी का अध्ययन करें और मरीज से भी पूछे जिससे शरीर में बीमारी फैलने के अति संवेदनशील वशेत्रों की जानकारी हो सके और उन क्षेत्रों का प्राथमिक रूप से इलाज किया जा सके। इस तरह प्रभावित क्षेत्रों के उपचार के अलावा, बीमारी के अन्य क्षेत्रों को भी शामिल करने की कोशिश करें। यदि आप विजुअलाइजेशन के साथ किसी और क्षेत्र को रोग में ग्रसित देखते हैं, तो आप उन पर ऊर्जा का संचालन करते रहें जिससे सभी ट्यूमर सिकुड़ जाये, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि आप ऐसा करते समय अपनी पारदर्शिता और सहजता बनाए रखेंगे। कैंसर के उपचार का अंत तभी करें, जब 7वें (सातवें) चक्र का इलाज करें और अंत में ग्राउंडिंग की प्रक्रिया करें।

कैंसर के मरीजों को अधिक फायदा तभी होगा जब नियमित इलाज चलता रहे और गम्भीर रोगी के लिये प्रति-दिन इलाज देना आवश्यक है ।

27.2 अन्य विभिन्न रोगो का उपचार

मधुमेहः मधुमेह रोगियों का इलाज हमेशा निम्न चक्रों से ऊपर की ओर करें, आमतौर पर दूसरे चक्र से, जब आप सामने का इलाज करते हैं और ऊपर की ओर बढ़े जैसा कि आप आमतौर पर पीछे की तरफ करते हैं। अग्नाशय का उपचार हाथों को सैंड्विच की तरह इस्तेमाल कर एक हाथ की हथेली को अग्नाशय के सामने रखते हुए और दूसरे हाथ की हथेली को शरीर की पीठ के तरफ रखते हुए ऊर्जा को चारों ओर आते हुए अनुभव करें और अग्नाशय को सक्रिय कर इलाज करें। इलाज को आगे बढ़ाते हुए दूसरे व तीसरे चक्रों का इलाज करें। मधुमेह का इलाज सामान्यतः सप्ताह में दो-बार करें।

तंत्रिका संबंधी रोगः मधुमेह की तरह इसका भी इलाज, निचले चक्र से ऊपर की ओर बढ़ाये और अवधि को बढ़ाते हुए स्टार का उपयोग कर सातवें चक्र तक इलाज करें। गर्दन के आस-पास, औरिक ऊर्जा की अशुद्धता या क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का इलाज सप्ताह में 1 या 2 बार अवश्य करें।

फेफड़ों के रोगः चक्र के विभिन्न स्थानों के इलाज के उपरांत फेफड़ों के रोगों या उनकी कमजोरियों का इलाज सीने के पसलियों के बीच हाथ को ले जायें, जब रोगी को एक विशिष्ट स्थिति में बैठाकर रखें और निम्नानुसार इलाज करें-

कंधे से 2-3 इंच नीचे और बाएं निप्पल के ऊपर, रोगी के छाती के सामने ऊपरी हिस्से पर दाहिना हाथ को रखें। अपने बाएं हथेली को अपनी दाहिने हथेली के सामने व मरीज की पीठ की स्थिति पर पीछे रखें। इस स्थिति को बनाए रखें, बाएं फेफड़े के क्षेत्र में और सीने की बीच की गहराई में ऊर्जा भेजें। एक बार यह समाप्त हो जाने के बाद, छाती के दाहिनी ओर का इलाज करें, दाएं फेफड़े, इसी तरह, सामने की ओर अपनी दाहिनी हथेली और रियर पर आपके बायीं हथेली रखें। दाहिने तरफ के उपचार के बाद, फिर से हृदय चक्र का इलाज, दाहिने हाथ को सामने और बाएं हाथ को चक्र के पीछे के रखकर, कई क्षणों के लिए ऊर्जा में भेजकर किया जाता है। कुछ गंभीर रूप से बीमार रोगी जो बैठने में सक्षम नहीं होते हैं, उनके फेफड़े का इलाज रोगी को लिटाकर किया जाता है। दाहिने हाथ को उपरोक्त वर्णित रूप में रखकर और बाएं हाथ को दाएं हाथ के नीचे रखकर किया जा सकता है और इसी तरह बाईं व दाईं तरफ का इलाज कर सकते हैं। अंत में, सामने के तरफ हृदय चक्र पर, दोनों हाथों को शीघ्रता से ओवरलैप करते हुये रखें।

संक्रामक रोग या संक्रमणः उपचार हमेशा परंपरागत चिकित्सा उपचार के अलावा एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग करते हुए होना चाहिए। रोगी अक्सर, इन सूक्ष्मजीवों में से एक के भी घेराबंदी के दौरान कमजोर हो जाएगा, इसलिये सभी रोगियों मजबूत करने हेतु, आभा चार्जिंग सहित हीलिंग की आवश्यकता होगी। बुखार से ग्रस्त होने पर, इस बात की आवश्यकता होती है कि इलाज में कम अवधि हो, परंतु प्रत्येक स्थिति में सामान्य समय से आधे से अधिक की आवश्यकता होती है।

कुछ एक चक्र अस्वास्थ्यकर महसूस करते हैं, अवरुद्ध हो सकते हैं, खराब रंग में प्रदर्शित होते हैं और हाथों के प्लैसमेंट के दौरान अतिरिक्त ऊर्जा आकर्षित करते हैं और उनमें कार्य हेतु अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है, ऐसे कुछ बीमारियों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया गया है-

- **पोलियो माइलाइटिसः** 5वा चक्र
- **हरपीजः** चक्र के निकतम प्रभावित क्षेत्र
- **मोनोन्यूक्लिओसिसः** चौथा चक्र व भुजाएं
- **कैंडिडाः** चौथा चक्र, तीसरा चक्र और दूसरा चक्र
- **सिफलिस या गोनोरियाः** दूसरा चक्र
- **तपेदिकः** फेफड़े के रोग के रूप मे उपचार
- **निमोनियाः** फेफड़े के रोग के रूप मे उपचार

आंतरिक अंगों के रोगः गुर्दे, यकृत, पेट, अग्न्याशय, पित्त मूत्राशय, आंतों आदि की बीमारियों के लिए, सामान्य रूप से उपचार करते हैं, लेकिन प्रभावित अंग के पास के चक्र पर अतिरिक्त समय व्यतीत करते हैं। यह संबंधित चक्र अक्सर, एक अस्वास्थ्यकर स्थिति महसूस कराता है, खराब रंग दिखाता है, अवरुद्ध हो जाता है, या हाथ पासिंग के दौरान अतिरिक्त ऊर्जा खींचता है। यह अक्सर तीसरा चक्र होता है, लेकिन यह संभावना रहती कि दूसरे चक्र में भी ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है (उदाहरण के तौर पर-निचली आंत के साथ)। यदि सम्भव हो तो रोगी को बैठाकर रोगी के अंग को सीधे इलाज करें और शरीर के सामने अंग पर दाहिने हथेली को और उसके सीधे पीछे शरीर की पीठ पर बाएं हथेली को रखकर उर्जा उपचार करें।

रोगी के प्रभावित अंग को अपने हथेलियों के बीच सैंडविच किये हुये, ऊर्जा को विस्तारित अवधि के लिए भेजें और अपने सैंडविच हाथों के बीच में देखें व अनुभव करें कि ऊर्जा शरीर के प्रभावित अंग में घुस रही है। रोग की गम्भीरता को देखते हुये इलाज 1-2 बार प्रति सप्ताह करें।

मानसिक विकारः मानसिक विकार से ग्रस्त रोगी के लिये कौन सा उपचार प्रभावी होगा, भविष्यवाणी करना असम्भव है। इसलिये रोगी के उपचार में आपको सावधानी के साथ आगे बढ़ना होगा। रोगी को उपचार थोड़े समय, जो सामान्य उपचार का आधा या एक तिहाई समय होना चाहिये, देना होगा और इससे हुये किसी भी प्रभाव को नोट करें तथा ध्यान से आगे बढ़े। क्या यह उपचार सुरक्षित है, आप पायेंगे कि मानक उपचार इन लोगों के लिये लाभप्रद है।

क्या किसी भी चक्र को अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता है या अपने कामकाज में अस्वास्थ्यकर महसूस या उसमे खराब रंग प्रदर्शित होता दिखता है, ऐसे में एक विस्तारित अवधि के लिये ऊर्जा को प्रवाहित करना चाहिए।

कान और आंखों की विकारः आखों के बीमारियों या उनमें तकलीफों के लिये, रोगी के आंखों पर दोनों हाथों को रखें, प्रत्येक नेत्र पर एक हाथ इस तरह रखें कि हथेलियों का केंद्र नेत्र गोलक पर हो। इस स्थिति में ऊर्जा आखों में भेजें। कानों के रोगों या विकारों के लिये, रोगी के सिर के दोनों तरफ किनारों पर प्रत्येक तरफ अपने एक हाथ की हथेली को रखें। रोगी को सुनने में हो रही कठिनाई या इससे सम्बंधित रोग की समस्याओं में इलाज की अवधि को बढ़ाते हुये 7वें (सातवें) चक्र का भी इलाज करें।

क्रमशः